❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के 201वें जन्मदिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ

वर्ष 48, अंक 17 | एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 17 फरवरी, 2025 से रविवार 23 फरवरी, 2025
विक्रमी सम्वत् 2081 | सृष्टि सम्वत् 1960853125
दयानन्दाब्द : 201 | पृष्ठ : 8
वार्षिक शुल्क : 250 रुपये | दूरभाष: 23360150
ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती एवं आर्यसमाज स्थापना के 150वें वर्ष - सार्द्ध शताब्दी वर्ष आयोजनों की श्रृंखला में विशेष प्रवचन माला का शुभारम्भ

देश की वर्तमान चुनौतियों का चिन्तन, मंथन और समाधान का लिया संकल्प

जन्मोत्सव एवं ऋषि बोधोत्सव पर 21 से 26 फरवरी 2025 तक दिल्ली में 11 स्थानों पर आयोजित होंगे भव्य आयोजन

आधुनिक भारत के निर्माता, महान समाज सुधारक, आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती जी के संपूर्ण मानवजाति पर इतने अनगिनत उपकार हैं कि हम जन्म जन्मांतरों तक भी उन्हें चुका नहीं सकते, जब हम उनके महान व्यक्तित्व और कृतित्व पर चिन्तन करते हैं तो ज्ञात होता कि महर्षि कैलाश पर्वत के सामान विशाल, विराट और अडिग थे, महर्षि को दुनिया का कोई पद, प्रतिष्ठा, धन, संपदा का प्रलोभन डिगा नहीं पाया, सारा जमाना उनका विरोधी था लेकिन उनके अदभुत धैर्य को, उनके उद्देश्य प्राप्ति के संकल्प को कोई हिला नहीं पाया, हर तरह के आंधी तूफान उनके सामने आए और चले गए, किन्तु महर्षि के सत्य के प्रकाश की शक्ति के सामने कोई टिक नहीं पाया, क्योंकि महर्षि दयानंद सच्चे ईश्वर भक्त थे, राष्ट्र के सच्चे उपासक थे, वैदिक धर्म के मसीहा थे, मानवता के पुजारी थे, वे प्रेम करुणा की प्रति मूर्ति थे, महान धर्मात्मा और दयालु थे, ऐसे ऋषियों के ऋषि, महर्षियों के महर्षि, ज्ञानियों के ज्ञानी, संतों के संत गुरुदेव दयानंद सरस्वती जी के 201वीं जन्मदिन पर 12 फरवरी 2025 को आर्य समाज हनुमान रोड के सभागार में चुनौतियों का चिंतन एक विशेष कार्यक्रम समारोह पूर्वक संपन्न हुआ। जिसमें दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य केंद्रीय सभा, वेद प्रचार मंडल और अनेक अन्य आर्य समाजों के अधिकारी, कार्यकर्ता और सदस्य उपस्थित रहे।

सर्वप्रथम मध्य दिल्ली की यज्ञ प्रशिक्षित महिलाओं ने मंत्र पाठ किया। सभा महामंत्री श्री विनय आर्य जी ने कार्यक्रम की भूमिका में बताया कि महर्षि दयानंद सरस्वती जी का हम गुणगान तो करते ही हैं, लेकिन उनके शिष्यों ने किस तरह से उस विकराल परिस्थिति में चुनौतियों का सामना किया, मानव समाज में फैली कुरीतियों को दूर करने के लिए कितना कष्ट और यातनाएं सहन की, समाज के तिरस्कार और बहिष्कार को सहन किया, अपना सर्वस्व न्यौछावर करके महर्षि दयानंद के सपनों को साकार करने का प्रयत्न किया। अत: आज हम उनके जन्मदिन पर वर्तमान में गतिशील चुनौतियों का चिंतन करेंगे और उनके समाधान हेतु संकल्प भी करेंगे। आपने महर्षि दयानंद सरस्वती जी सहित आर्य समाज के महापुरुषों के त्याग और बलिदान के उदाहरण देते हुए प्रेरणा लेने का संदेश दिया। आर्य केंद्रीय सभा के प्रधान श्री सुरेंद्र रैली जी ने वर्तमान में अंधविश्वास को एक बड़ी चुनौती बताते हुए कहा कि

- शेष पृष्ठ 7 पर

उत्तर प्रदेश के माननीय मुख्यमन्त्री
श्री योगी आदित्यनाथ जी से भेंट

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती एवं 150वीं आर्यसमाज स्थापना वर्ष के आयोजनों हेतु लखनऊ में उनके आवास पर चर्चा एवं महर्षि के अमर वाक्य पुस्तक भेंट करते हुए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य जी एवं श्री ओम प्रकाश आर्य जी

समस्त आर्यसमाज एवं आर्य संस्थाएं हर्षोल्लास से मनाएं
महर्षि दयानन्द दशमी
23 फरवरी, 2025 तदनुसार फाल्गुन कृष्ण दशमी (रविवार)

समस्त आर्य समाजों एवं आर्य संस्थाओं के अधिकारियों से निवेदन है कि -

★ गत वर्षों की भांति अपने आर्य समाज एवं आर्य संस्थाओं के भवनों को लाइटिंग से सजाएं। ★ अपने घरों की छत पर नए ओम ध्वज फहराएं। ★ यज्ञ, भजन, सत्संग और वेद प्रचार का करें विशेष आयोजन। ★ प्रभात फेरी और शोभा यात्राओं का करें आयोजन। ★ महर्षि का चित्र, उनकी जीवनी, सत्यार्थ प्रकाश एवं वैदिक साहित्य वितरित करें। ★ अपने क्षेत्र के उच्च अधिकारियों जैसे एसडीएम, पुलिस अधिकारी, मुख्य चिकित्सक, वकील, इंजीनियर आदि महानुभावों को भेंट करें वैदिक साहित्य। ★ युवा वर्ग को विशेष रूप से आर्य समाज और महर्षि दयानंद के विचारों से अवगत कराने का अवश्य करें प्रयास। ★ समाचार पत्र और पत्रिकाओं में महर्षि की शिक्षाओं, उनके जीवन से जुड़ी हुई घटना और शुभकामना विज्ञापन के प्रकाशन कराएं। ★ आर्य समाज के स्वर्णिम इतिहास पर आधारित कार्यशालाएं और नाटकों का मंचन करें। ★ अस्पतालों में रोगियों के बीच फल वितरण करें। ★ सोशल मीडिया पर जन्मोत्सव और बोधोत्सव बधाई और शुभकामनाएं भेजें।

निवेदक :

सुरेशचन्द्र आर्य	धर्मपाल आर्य	सुरेन्द्र रैली
प्रधान	प्रधान	प्रधान
सार्वदेशिक सभा दिल्ली	आर्य प्रतिनिधि सभा	आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली

आर्य समाज 150

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

17 फरवरी, 2025
से
23 फरवरी, 2025

देववाणी-संस्कृत

ज्ञानी पुरुष सब ओर ईश्वरकृत अद्भुत बातों को देखता है

वेद-स्वाध्याय

अतो विश्वान्यद्भुता चिकित्वाँ अभि पश्यति। कृतानि या च कर्त्वा।।
-ऋ० 1। 25। 11
ऋषि:-आजीगर्तिः शुनः शेपः।। देवता-वरुणः।। छन्दः-गायत्री।।

शब्दार्थ-चिकित्वान् = ज्ञानी पुरुष **कृतानि या च कर्त्वा** = जो की जा चुकी हैं और जो की जाएँगी **विश्वानि अद्भुतानि** = उन सब अद्भुत बातों को अतः = इस परमेश्वर से हुई **अभिपश्यति** = सब ओर देखता है।

विनय-इस संसार में हम बहुधा आश्चर्यचकित कर कर देनेवाली घटनाएँ होते देखा करते हैं। इनका करनेवाला कौन है, वैसे तो प्रतिदिन होनेवाली बातों को भी यदि हम ध्यानपूर्वक देखें तो हमें उनमें भी बड़ी अद्भुतता दीखेगी। ये अन्धकार और प्रकाश कितनी अद्भुत वस्तु हैं जिनका परिवर्तन हम रोज सायं-प्रातः देखते हैं! नन्हे-से बीज से बड़ा भारी वृक्ष बन जाना; अभी चलते-फिरते, हँसते-खेलते दीखते मनुष्य का एकदम ऐसा सो जाना कि वह फिर कभी न जग सकेगा; जीव से जीव पैदा हो जाना- ये सब भी वास्तव में कितनी अद्भुत बातें हैं! परन्तु जब पृथिवी आग बरसाने लगती है और ज्वालामुखी फटने से सैकड़ों शहर बरबाद हो जाते हैं, भूकम्प आते हैं बड़े-बड़े साम्राज्य देखते-देखते मिट जाते हैं, थोड़े ही दिनों में एक मनुष्य सितारे की भाँति ऊँचा उठ जाता है, यशस्वी हो जाता है या राजा रंक हो जाता है, तो इनमें अद्भुतता सभी अनुभव करते हैं। विज्ञान के आजकल के अद्भुत चमत्कारों को देखो! सिद्ध साधु-सन्तों द्वारा हुई चकित कर देनेवाली बातों को देखो! ये सब संसार में एक-से-एक बढ़कर अद्भुत हैं। इन बस अद्भुतों का करनेवाला कौन है ? हम लोग समझते हैं कि इनके करने वाले मनुष्य हैं, मनुष्य की वैज्ञानिक शक्ति या संघशक्ति है; या कुछ भी नहीं है केवल प्रकृति का खेल है, परन्तु जो ''चिकित्वान्'' (जानने वाले) हैं उन्हें तो सब ओर इन अद्भुतों का करने वाला वही इन्द्र (परमेश्वर) दीखता है। उसी से ये सब संसार के आश्चर्य निकलते दीखते हैं। इन सब विविधि आश्चर्य को देखते हुए उनकी दृष्टि सदा उस एक इन्द्र पर ही रहती है। उनके लिए फिर ये आश्चर्य कुछ आश्चर्य नहीं रहते। प्रभु तो ''गूँगे को वाचाल करनेवाले और लँगड़े को भी पहाड़ लँघाने वाले'' हैं ही। संसार में जो अद्भुत बातें हो चुकी हैं वे सब प्रभु की ही की हुई थी; कल जो अद्भुत घटना होनेवाली है, कोई तख्ता पलटने वाले है, वह भी उसी प्रभु की सहज लीला से ही होने वाला है। प्रभु की अपार लीला देखनेवाले ज्ञानी इसमें कुछ आश्चर्य नहीं करते वे अद्भुत-से अद्भुत घटना में कार्यकारण भाव को देखते हैं।

अतः हे मनुष्यो! संसार के इन आश्चर्यों को देखकर चकित होना छोड़ दो, किन्तु इनको देखकर इनके कर्त्ता को पहचानो। उस नट को पहचानो जोकि संसार को यह अद्भुत नाच-नचा रहा है।

-:साभार:-
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

आर्य समाज का
150वां स्थापना वर्ष

किन चुनौतियों का चिंतन जरूरी है?

काल की अपनी एक पुकार होती है। हर काल की अपनी एक अलग पीड़ा होती है। इस कारण हर काल का युद्ध भी अलग होता है। जंग तलवारों से हो या विचारों से, लड़ी हमेशा समूह और समाज में जाती है। आज हमारे सामने हमारे बौद्धिक जीवन में नया युद्ध खड़ा कर दिया गया है। जल जहरीला, जमीन जहरीली, नशे की गर्त में समा जाने को आतुर युवा दिख रहा है तो कहीं षड्यंत्र के तहत समाज को तोड़ा जा रहा है। नए अंधविश्वासों के जन्म के साथ मूलभूत शिक्षाओं की उपेक्षा करते हुए विदेशी भाषाओं, वैचारिक फैशनों का अंधानुकरण चल पड़ा है। शिक्षा के पाठ्यक्रमों में विदेशी कहानियाँ, विदेशी नायक खड़े किए जा रहे हैं। हमारे महापुरुषों और अनेक मनीषियों को लगभग विस्मृत कर दिया गया है। यहाँ तक कि समाज को दिशा देने वाले साहित्य पर भी आज अश्लीलता ने डेरा जमा लिया है। सूचना क्रांति में अग्रणी भूमिका निभा रहे सोशल मीडिया जैसे प्लेटफार्म पर इन विचारों से भारतीय संस्कृति को एक किस्म से स्लो मोशन में हानि पहुंचाई जा रही है।

एक अत्यंत ज्वलंत विषय भी आज हमारे सामने है, वो है सिकुड़ते छोटे होते परिवार। आज अनेकों परिवार में बच्चा भी है और माता-पिता भी। लेकिन किसी एक के यहाँ अकेली बेटी है तो किसी के यहाँ अकेला बेटा। कुछ लोग अब "नो चाइल्ड पॉलिसी" जैसे षड्यंत्र के तहत बच्चा ही पैदा नहीं करना चाहते हैं। इसके अलावा, समाज में रिश्तों-नातों का बड़ा अकाल आगे पड़ने वाला है। अगर अब नहीं संभले तो आगे चलकर देश में बुजुर्ग होंगे लेकिन युवा और बच्चे कम ही दिखाई देंगे।

पांचवा विषय आज समाज में दरगाहों में लेकर बंगाली बाबा चंगाई सभा जैसे अनेकों अंधविश्वास परोसे जा रहे हैं। समाज में षड्यंत्र के तहत दो वर्ग विशेष अंधविश्वास फैलाकर धर्मांतरण सरीखे कार्यों को अंजाम देने में लगे हुए हैं। जिनके प्रति अगर समय रहते समाज को जागरुक न किया गया, तो आने वाले समय में बचाने के लिए हमारे पास कुछ न बचेगा।

देखा जाए, आज चारों ओर एक षड्यंत्र सा रचा जा रहा है। नशे की लत युवाओं में तेजी से फैल रही है, जिसके चलते युवाओं का भविष्य अंधकार में हो रहा है। लेकिन यह लत भी समझनी पड़ेगी कि नशा उनके जीवन बन रहा है या किसी बाहरी षड्यंत्र के तहत बनाया जा रहा है? कौन लोग हैं जो आज भारत के युवा को तबाह करने के लिए गुप्त व्यूह रच रहे हैं? इसी तरह आज हमारी जमीन, जिसे हम माँ का दर्जा देते हैं, उस जमीन को भी रासायनिक खाद डालकर उसे इतना जहरीला बनाया जा रहा है कि अब फसल के साथ कैंसर, शुगर जैसी अनेकों बीमारी हमारे शरीर में प्रवेश कर रही है। जबकि स्वामी ने बहुत पहले प्राकृतिक खेती जैसा नारा देते हुए गौकरुणानिधि जैसी पुस्तक लिखकर हमें चेताया भी था। किंतु देश का भोला किसान एक षड्यंत्र के तहत विदेशी रासायनिक कंपनियों के जाल में ऐसा फंसाया गया कि उसे पता नहीं चला कि कब उसकी मिट्टी जहरीली बन गई!

इसी तरह आज देश में राजनीति एवं कुकरमुत्तों की तरह उपजते अनेक जातिवादी, उपजातिवादी कुछ एक संगठनों द्वारा कई अवसरों पर आपस में बांटने या हीनता की भावना पैदा करने का षड्यंत्र साफ-साफ झलक रहा है। पिछले कई दशकों से समानता, समरसता के क्षेत्र में हमने बहुत कुछ किया। किंतु फिर भी आज कहीं जाति के कारण दुल्हे को घोड़ी पर नहीं चढ़ने दिया जाता, कहीं दुल्हन डोली में नहीं बैठ सकती। कहीं मंदिर में जाने से रोका जाता है, कहीं छू लेने मात्र से ही गंगा नहाने की परंपरा बनाई गई हो, साथ बैठकर खाने से पाप की दुहाई हो। इस षड्यंत्र पर चर्चा बहुत जरूरी है। तभी समाज में बढ़ते विघटन को कैसे रोका जा सकता है।

एक अत्यंत ज्वलंत विषय भी आज हमारे सामने है, वो है सिकुड़ते छोटे होते परिवार। आज अनेकों परिवार में बच्चा भी है और माता-पिता भी। लेकिन किसी एक के यहाँ अकेली बेटी है तो किसी के यहाँ अकेला बेटा। कुछ लोग अब "नो चाइल्ड पॉलिसी" जैसे षड्यंत्र के तहत बच्चा ही पैदा नहीं करना चाहते हैं। इसके अलावा, समाज में रिश्तों-नातों का बड़ा अकाल आगे पड़ने वाला है। अगर अब नहीं संभले तो आगे चलकर देश में बुजुर्ग होंगे लेकिन युवा और बच्चे कम ही दिखाई देंगे।

पांचवा विषय आज समाज में दरगाहों में लेकर बंगाली बाबा चंगाई सभा जैसे अनेकों अंधविश्वास परोसे जा रहे हैं। समाज में षड्यंत्र के तहत दो वर्ग विशेष अंधविश्वास फैलाकर धर्मांतरण सरीखे कार्यों को अंजाम देने में लगे हुए हैं। जिनके प्रति अगर समय रहते समाज को जागरुक न किया गया, तो आने वाले समय में बचाने के लिए हमारे पास कुछ न बचेगा।

इतना ही नहीं, किशोर-शिक्षा के नाम पर एक अंतर्राष्ट्रीय व्यवसाय चल पड़ा है, जो यौन-रोगों को रोकने के नाम पर भारत में ऐसी शिक्षा परोसी जा रही है मानो बच्चों को यौन-संबंध तो बनाना ही है। बस, जरा 'सुरक्षित' बनाएं। आखिर इस मान्यता का आधार क्या है! यही कि किशोर बच्चे यौन-संबंध के बिना नहीं रह सकते? यह स्थिति पश्चिमी संस्कृति में हो सकती है, जो ब्रह्मचर्य चेतना से अपरिचित है। हमारे यहाँ तो ऋषि-मुनि इन सब बीमारियों से बचने के लिए ब्रह्मचर्य जैसी ठोस मजबूत चेतना से परिचित करा गए हैं।

लड़ाई सिर्फ एक मोर्चे पर नहीं है। आज हम अपनी संपूर्ण शिक्षा, विमर्श, पाठ्यचर्या आदि को उलटें, तो हमारे ऐतिहासिक नायकों की कही गई बातों में एक भी शायद ही कहीं मिले। फिर देश की प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं, टेलीविजन चैनलों की संपूर्ण सामग्री पर ध्यान दें, जहाँ ये लिखा जाना चाहिए था कि "वैदिक संस्कृति" के साथ चलो, आज वहाँ मोटे-मोटे अक्षरों में छापा जाता है कि "कंडोम" के साथ चलो! यह सब पढ़ने में जितनी शर्म महसूस होती है, अब उतना ही लिखने में भी शर्म महसूस हो रही है। लेकिन क्या करें, जिस तरह आज ये सब परोसा जा रहा है, तो शायद कल कुछ भी बचाने को हमारे पास शेष न रहे।

इस अंधानुकरण मानसिकता से समाज का घोर सांस्कृतिक पतन होता जा रहा है। इसी की परिणति बच्चों समेत सबको खुले व्यभिचार की स्वीकृति देने में हो रही है। सिनेमा, विज्ञापन आदि उद्योग हमारे बच्चों और किशोरों में ब्रह्मचर्य की उलटी गतिविधियों की प्रेरणा जगाते हैं। यह हमारे सबसे अग्रणी पब्लिक स्कूलों की शिक्षा है। ऋषियों-महर्षियों समेत सभी महापुरुषों की सारी बातें कूड़े में और विकृत भोगवाद को बढ़ावा दिया जा रहा है। इसीलिए अधिकतर लोग भोग के अलावा नितांत उद्देश्यहीन जीवन जीते हैं। लोगों को सिर्फ उत्तेजक भोजन, उत्तेजक सिनेमा, उत्तेजक विज्ञापन, उत्तेजक संगीत, चित्र, मुहावरे आदि सेवन करने को परोसे जा रहे हैं। - शेष पृष्ठ 7 पर

बाल बोध

परीक्षा में कैसे मिलेगी सफलता?

कॉन्सेन्ट्रेशन से मतलब है जो आप पढ़ रहे हैं, वह ठीक ढंग से रिकार्ड हो सके। आपके दिमाग में प्रवेश हो सके। बहुत ध्यान से रुचिपूर्वक पढ़िए। रुचि पैदा करके पढ़ने में मन लगाना चाहिए। यह सोच करके पढ़िए कि यही विद्या मेरा भविष्य तय करेगां। मेरा भविष्य इसी से बनेगा।

जो क्लास में प्रथम आते हैं, वे आसमान से उतरे हुए कोई फरिश्ते नहीं होते हैं। सोचना चाहिए कि जैसे वे हैं, वैसे ही मैं हूं। मुझे थोड़ी सी कोशिश ज्यादा करनी पड़ेगी। बस इतनी सी बात है। थोड़ा टाइम पढ़ाई में ज्यादा लगेगा तो आप भी आगे बढ़ सकते हैं ऐसा मन में विश्वास रखकर पढ़ें।

कोई भी व्यक्ति सर्वगुण सम्पन्न तो नहीं होता। किंतु हर व्यक्ति के अन्दर कोई न कोई प्रतिभा अवश्य होती है। इंसान में प्रतिभा (टैलेन्ट) केवल 2 प्रतिशत होता है। 98 प्रतिशत तो उसका पुरुषार्थ होता है। ज्यादा से ज्यादा औसत 3 प्रतिशत हो सकता है, लेकिन 97 या 98 प्रतिशत पुरुषार्थ ही आपकी प्रतिभा को विकसित करता है। अब प्रश्न उत्पन्न होता है कि अपनी प्रतिभा को विकसित करने का तरीका क्या है? कई लोग सोचते हैं कि स्मृति बढ़ाने की चीजें खानी चाहिए। जिससे स्मरणशक्ति अच्छी हो जाए। लेकिन कभी भी अक्ल की दवाई बाजार में नहीं मिलती है। मेमोरी, याददाश्त बढ़ाने की दवाईयां शुरू हुई, लेकिन वे सब फेल हैं। बहुत सारे टैबलेट्स आदि बाजार में आनी शुरू हुई हैं पर वे कोई खास चीज नहीं हैं।

शास्त्रों में कहा गया है कि ''**अश्मा भव, परशुर्भव**'' तू पत्थर बन। अर्थात् तुम पत्थर जैसे कठोर शरीर वाले बनो। ''परशुर्भव'' परशु कहते हैं फरसे को या कुल्हाड़े को। अर्थात् दिमाग से तू फरसा जैसा तीक्ष्ण हो जा। फरसे का जितना प्रयोग करते जाएं, उतना ही वह तीखा, तेज होता जाता है और अगर उसका प्रयोग न करें तो उसमें जंग लगना शुरू हो जाता है। वस्तुत: मनुष्य की बुद्धि भी ऐसी है, दिमाग भी उसका ऐसा ही है। उसका प्रयोग जितना ज्यादा करेंगे, उतने ही प्रखर होते चले जाएंगे, अगर इनका प्रयोग नहीं करें तो बुद्धि कुन्द होनी शुरू हो जाएगी, उसमें जंग लगना शुरू हो जाएगा। इसलिए सीखने की आदत जरूर बनाइए। सीखने के लिए एक ट्रिक जरूर इस्तेमाल करें। जो विद्यार्थी कम्पटीशन में बैठते हैं, उन्हें यह जरूर ध्यान देना चाहिए। एक जगह पर लगातार बैठकर दो घण्टे पढ़िए और उसके बाद दस मिनट का थोड़ा-सा ब्रेक दें, दस मिनट के ब्रेक के बाद आप अपनी कुर्सी से उठकर अपने मुंह पर पानी के छींटें लगाइए। इस तरह से तीन बार कीजिए। अच्छी तरह से अपने आपको प्रफैश करने के बाद, फिर एक या आधा गिलास पानी पीकर, थोड़ी देर ताजी हवा में जाकर टहलिए।

विद्यार्थी बदलाव लाने के लिए अपनी पढ़ाई छोड़कर 10 मिनट के लिए फोन या टी.वी. के सामने बैठ जाते हैं। वे कहते हैं कि मूड चेंज करने के लिए यह जरूरी है, लेकिन उन्हें यह पता नहीं है कि किरणों का जो विकरण टी.वी. के माध्यम से निकलता है, वह मस्तिष्क पर और ज्यादा दबाव डालता है। विद्यार्थियों को जो ताजगी लगती है, वह उन्हें म्यूजिक के कारण लगती है। इसके लिए आप कोई म्यूजिक चला लें, लेकिन टहलते हुए। इससे भी बढ़िया तरीका यह है कि आप गुनगुनाते हुए केवल दस मिनट टहल लीजिए। फिर तीन-चार मिनट के लिए शवासन में लेट जाएं। लम्बे-गहरे श्वास लें, क्योंकि जितनी ज्यादा आपके ब्रेन को आक्सीजन मिलेगी उतना ही दिमाग बढ़िया ढंग से काम करेगा। दस मिनट का जो ब्रेक है वह आपके मस्तिष्क को ज्यादा ग्रहण करने की शक्ति देता है।

पढ़ने वाला कमरा भी आपका ऐसा होना चाहिए कि जिसमें ताजी हवा आती-जाती हो। ऐसे कमरे में मत बैठिए जिसमें हमेशा घुटन रहती हो। हो सके तो पूर्व की ओर अपना मुख करके, अपनी टेबल को पूर्व की दिशा में लगाइए। जिससे आपका चेहरा पूर्व की ओर हो। क्योंकि प्रकाश उधर से ही आता है, इसलिए अन्दर ज्ञान भी बहुत तेजी से आएगा। वे अध्ययन के समय जागरूक रहेंगे और परीक्षा में अवश्य सफल होंगे।

दूसरी बात यह है कि कम्पटीशन वाले विद्यार्थी डरकर नहीं पढ़ें। चाहे वे अट्ठारह घण्टे बैठकर पढ़ें, लेकिन उनके अन्दर घबराहट है, तो फिर पढ़ा हुआ याद नहीं हो पाता। दिमाग में पढ़ा हुआ सुरक्षित नहीं होगा, रिकार्ड नहीं होगा। कई विद्यार्थी पढ़ते समय गाने भी चला लेते हैं और साथ में पढ़ते भी रहते हैं, लिखते भी रहते हैं। वे सोचते हैं कि ऐसे में अच्छी पढ़ाई होती है लेकिन यह विधि, यह प्रक्रिया बिल्कुल गलत है। जैसे कोई टेपरिकार्ड से आवाज रिकार्ड करना चाहता है, किन्तु आसपास से गाड़ियां जा रही हों, लोग भी बोलते हुए जा रहे हों, तो क्या वहां बढ़िया रिकार्डिंग हो सकती है?

जैसे रिकार्डिंग के लिए साउण्ड प्रूफ स्टूडियो बनाया जाता है। ठीक ऐसे ही जहां आप पढ़ना चाहते हैं वह स्थान भी एकदम शान्त और एकान्त होना चाहिए। जिससे कॅन्सेन्ट्रेशन पूरी तरह से बनाया जा सके।

कॅन्सेन्ट्रेशन से मतलब है जो आप पढ़ रहे हैं, वह ठीक ढंग से रिकार्ड हो सके। आपके दिमाग में प्रवेश हो सके। बहुत ध्यान से रुचिपूर्वक पढ़िए। रुचि पैदा करके पढ़ने में मन लगाना चाहिए। यह सोच करके पढ़िए कि यही विद्या मेरा भविष्य तय करेगां। मेरा भविष्य इसी से बनेगा।

– शेष पृष्ठ 7 पर

परिवर्तन : आता नहीं है – लाया जाता है।

सृष्टि के आरम्भ से लेकर महाभारत काल तक के भारतवर्ष का वैभव काल

गतांक से आगे –

भारत के अतिरिक्त लिपि (लिखने की कला) का आविष्कार किसने किया। संस्कृत जैसी महानतम और समृद्धतम भाषा के निर्माण की विद्या और अक्षर विज्ञान आखिर कहां से आया, जिसको आज दुनिया की सब भाषाओं का मूल माना जाता है।

संगीत कला के मूल 'सात स्वरों' का ज्ञान आखिर किसकी देन थी। वाक् कला, नृत्य कला, नाट्य शास्त्र (नाटक कला) आदि काल में किसने मनुष्यों को सिखलाई। प्रकाश को सात रंगों में किसने बांटा, किसने पहचाना? इन्द्र धनुष के सात रंगों को नाम किसने दिए थे और उन अलग-अलग रंगों के होने के वैज्ञानिक कारणों को किन्होंने लिपिबद्ध किया था। निश्चित रूप से उत्तर है वेद विद्या के प्रचार के चलते आर्यावर्त्त (भारत) के महान् वैज्ञानिक ऋषियों ने ही।

गौरव की बातें भी जरूर जानें— दिल्ली में मौजूद कुतुब मीनार भी वास्तव में एक वेधशाला थी। यानि समय, पंचांग आदि की गणना का केन्द्र। समय, तिथि आदि का सही अनुमान लगाने की विद्या थी हमारे पास। सूर्य की पृथ्वी पर पड़ने वाली परछाई की अलग आकृति और ऊंचाईयों और गहराई से समय, तिथि आदि का सही अनुमान लगाने की विद्या और समय गणना के केन्द्र थे हमारे पास। विष्णु लाट (लोहे की लाट) की निर्माण कला और उसका विज्ञान अद्भुत एवं एकमात्र भारत में ही था।

दिल्ली स्थित कालका मन्दिर भी **'काल का मन्दिर'** यानि समय का मन्दिर-यानि वेधशाला ही थी। कोर्णाक का सूर्य मन्दिर भी एक शानदार वेधशाला के रूप में मानव जाति को शिक्षा देता था। उसके रथ के पहियों की कलाकृति और उसका विज्ञान वास्तव में दुनिया में कहीं भी नहीं था। ऐलोरा के प्राचीन भवन, ऐलिफेंट्या की गुफाओं के निर्माण, जल संचय के लिए पाटन (गुजरात) में स्थित अद्भुत कृति 'रानी की वाव' आदि के बनाने के पीछे की विद्या को देखेंगे तो आप पाएंगे कि बिना वास्तु शास्त्र के और उसके अनुसार विद्या प्राप्त किए योग्य इंजीनियर्स के और विशिष्ट योग्यता प्राप्त शिल्पियों के, ये कार्य होना क्या सम्भव था?

अग्नि की विद्या का संसार के कल्याण के लिए उपयोग करने का विज्ञान (यज्ञ विज्ञान) जो घर-घर हुआ करता था, जिसके न करने वाले के लिए राज्य द्वारा दण्ड का प्रावधान था। क्योंकि यह 'यज्ञ विज्ञान' पृथ्वी की जलवायु और वातावरण को बिल्कुल भी प्रदूषित नहीं होने देता था। अतिवृष्टि और अनावृष्टी के लिए इस यज्ञ विद्या का बहुधा प्रयोग होता था। जिससे राज्य की उन्नति कभी प्रभावित नहीं होती थी। अच्छी फसल, उन्नत पृथ्वी, स्वच्छ वायु और औषधियुक्त जल ही राज्य की उन्नति के प्राण थे। कोई तो बड़ा कारण होगा कि राज्य की उन्नति के लिए किए जा रहे यज्ञों की रक्षा करने के लिए राजा दशरथ ने अपने बड़े पुत्र राम को भेजा, सेनापति को नहीं?

प्राचीन ढलाई कला—मूर्ति कला के शानदार उदाहरण केवल भारत में ही मौजूद हैं और नदियों को जोड़ने की विद्या तो ऐसी थी, जिसके कारण भारत के प्राचीन इतिहास में बाढ़ आदि का खतरा या सूखे की समस्या कभी हुई ही नहीं। इसीलिए हमेशा खुशहाल था भारत, समृद्ध था भारत और यदि ऐसा कुछ थोड़ा-बहुत किसी लापरवाही से हुआ भी हो तो हमारे पास वृष्टि यज्ञ की भी विद्या थी, जिनका राजाओं द्वारा अपने राज्य की उन्नति के लिए प्रयोग किया जाता था। यानि जब चाहे वृष्टि हो और जब न चाहें न हो।

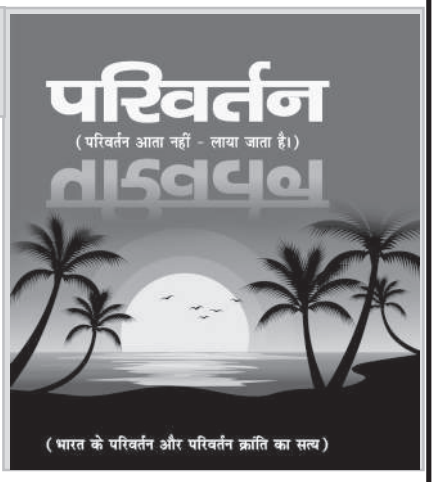

पाठक आज पढ़ते हुए यह जरूर विचार करें कि आखिर इन विद्याओं का मूल स्रोत क्या था? कौन थे उसको देने वाले? किन ग्रन्थों में उन सिद्धान्तों को लिखा गया? **निश्चित वेद और केवल वेद।**

– क्रमश:

पुस्तक घर बैठे/ऑनलाइन प्राप्त करने हेतु कोड स्कैन/लॉगिन करें
www.vedicprakashan.com
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
वैदिक प्रकाशन
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
मो. 09540040339, 011-23360150

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला-2025

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट के सहयोग से 1 फरवरी से 9 फरवरी तक नई दिल्ली में सम्पन्न हुआ वृहद साहित्य प्रचार कार्यक्रम

लाखों हाथों एवं हजारों संस्थाओं तक पहुंचा वेद, सत्यार्थ प्रकाश, रामायण, गीता ज्ञान

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की शिक्षाएं सपूर्ण मानवजाति को सुदिशा राष्ट्र एवं मानव सेवा को समर्पित आर्य समाज के संस्थापक प्रदान करती हैं। महर्षि की 200वें जयंती वर्ष और आर्य समाज 150वें स्थापना दिवस के दो वर्षीय आयोजनों के अंतर्गत विश्व पुस्तक मेला 1 से 9 फरवरी के 2025, नई दिल्ली के प्रगति मैदान में आर्य समाज के प्रचार-प्रसार और विस्तार के साथ संपन्न हुआ।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने पूर्व की भांति इस वर्ष भी हॉल न. 2 में 10 स्टॉल लगाए। स्टॉलों का उद्घाटन माननीय श्री धर्मपाल आर्य, प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट) एवं ठाकुर विक्रम सिंह के करकमलों से हुआ। उद्घाटन के अवसर पर श्री सतीश चड्डा, महामंत्री आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली, श्री ओम प्रकाश आर्य वरष्ठि उप प्रधान, श्री वीरेन्द्र सरदाना मंत्री, श्री सुखीवर सिंह आर्य, मंत्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा उपस्थित रहे। श्री धर्मपाल आर्य ने सत्यार्थ प्रकाश के महत्व को रेखांकित करते हुए इसे मानव जाति के कल्याण की पुस्तक बताया । इसका ''पन्ना पन्ना पन्ना है और अक्षर-अक्षर मोती है'' अर्थात प्रत्येक पृष्ठ बेशकीमती और शब्द व विचार बहुमूल्य है, जिनका मूल्य नहीं है, वे अमूल्य हैं। ठाकुर विक्रम सिंह ने पुस्तकों के स्वाध्याय पर बल दिया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि द्वारा मेले में कार्यकर्ताओं का सम्मान व उत्साहवर्द्धन पीत वस्त्र से किया गया।

पुस्तक मेले का मुख्य आकर्षण वेद, रामायण, महाभारत, मनुस्मृति सहित हैदराबाद के मंत्री कृष्णा रेडडी के 15 ग 18 साईज के वेद 6 पुस्तकों में तथा इन सभी का एक ही पुस्तक में समाहित करना रहा। प्रत्येक पुस्तक क्रमश: 7 किलो की है एवं समग्र वेद ग्रंथ 40 किलो की, जिसका स्टैण्ड हाथी है तथा कीमत 41000 रु/- है। पाठको ने इसे ज्ञानवर्द्धक एवं पवित्र ग्रंथ के रूप में माना और साथ में सेल्फी खिचवाई। मेंले मे 5000 सत्यार्थ प्रकाश की बिक्री हुई। 20-20 रु/-में सत्यार्थ प्रकाश को बेचा गया। अमेरिका आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा अंग्रेजी भाषा में अनुवाद कराई गयी पुस्तक ''दो बहनों की बाते'' का विमोचन श्री सुरेन्द्र कुमार रैली, प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के करकमलों से हुआ। उन्होंने पुस्तक मेले को दिल्ली सभा के सभी प्रकल्पों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण बताया।

डां. मुकेश आर्य ने आर्ष साहित्य एवं पुस्तकों को मनुष्य का सच्चा मित्र बताया। दिल्ली सभा के स्टॉल पर समय-समय पर आर्य जगत के गणमान्य महानुभाव अपना अशीर्वाद और मार्ग दर्शन देने हेतु आते रहे। यथा श्रीमती वीना आर्य, आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट से जिनके आर्थिक सहयोग से ये स्टॉल लगाए जाते हैं, सुभाष दुआ, मंत्री अखिल भारतीय शुद्धि सभा, डॉ. विवेक आर्य लेखक, अजय कुमार, सुरेश चन्द्र गुप्ता (गोविन्दराम हंसानन्द)ने स्टॉल पर सेवाए प्रदान की।

ईश्वर, जीव, प्रकृति, कर्मफल आदि जटिल विषयों व प्रश्नों की शंकाओं के समाधान हेतु शंका समाधन कथा का संचलान आचार्य भद्रकाम वर्णी द्वारा हुआ। आचार्य प्रदीप जी गरुकुल खेदी सोनीपत तथा ओम प्रकाश आर्य भी स्टॉल पर उपस्थित हुए।श्रीमती त्रिप्ता शर्मा प्रबन्धक रतन चन्द आर्य पब्लिक स्कूल अपनी अध्यापिकाओं व सैकड़ों छात्रों को सभा के स्टॉल पर आई और साहित्य के क्रय हेतु प्रेरित किया। अमेरिका से श्रीमती एवं श्री ईश्वर सिंह, गुड़गांव से विभा आर्या ने स्टॉलो की शोभा को बढ़ाया व यथायोक्त सहयोग दिया।

बिल बनाने व कैश के कार्य को देवेन्द्र सचदेवा, हर्ष आर्या सुषमा सरदाना, शकुन्तला पांचाल, संदीप (सभा) वीरेन्द्र आर्य मंत्री, ओम प्रकश आर्य ने निभाया, सत्यार्थ प्रकाश काउन्टर को सुधीर गुप्ता, ओमदत्त पांचाल, ऋषिराज वर्मा, नवनीत अग्रवाल ने संभाला। प्रेमशंकर मोर्य (लखनऊ से) का सहयोग व समर्पण वास्तव में प्रशंसा के योग्य है। आप एक कार्यक्रम के साथ वैदिक विद्वान के रूप में शंका संमाधान करते हैं। प्रियांशु सेठ (बनारस से) डॉ. विजेन्द्र (पिलखुवा से), रवि प्रकाश (सभा) विद्यावती, गया प्रसाद वैद्य, कृष्ण योगाचार्य, प्रद्युम्न, रवि सूर्यान, हर्ष प्रजापत ने पूर्व वर्षो की भांति सहयोग किया। खुशी की बात यह हैं कि सभा के इस प्रकल्प में नए-नए सहयोगी भी जुड़ रहे है, जिनमें सर्व प्रथम वीरेन्द्र सौलंकी, राहुल शर्मा, मीमांस पांचाल, बबीता सैनी, राजेश आर्य, यशवीर आर्य (सभा) डॉ. डी. के. गर्ग, चेयरमैन, ईशान ग्रुप ऑफ एजेूशन, आर्यसमाज सुन्दर विहार दिल्ली का विशेष आर्थिक सहयोग प्राप्त हुआ। दिल्ली की विभिन्न आर्य समाजों के अधिकारी जयपाल गर्ग, सुरेन्द्र वर्मा, धर्मपाल यादव, धर्मेन्द्र आर्य, राजवती धामा, राजवती आर्या, रवि छिक्कारा, डॉ. बी.डी. लाम्बा, मान्धाता आर्य आदि महानुभाव पहुँचे। श्री सतीश चड्डा अध्यक्ष विश्व पुस्तक मेला समिति ने स्टॉल डिजाइन, साज-सज्जा, अतिथि महानुभावों के निमंत्रण में विशेष भूमिका निभाई। सुखवीर सिंह आर्य सह अध्यक्ष विश्व पुस्तक मेला ने भी समय-समय पर स्टॉल संबंधी सुझाव व जानकारी आदान-प्रदान करते रहे। बृहस्पति आर्य द्वारा भेजे गए प्रचारकों आचार्य शिवा शास्त्री, राजवीर शास्त्री, दिनेश शास्त्री, आशीष, धर्मवीर आर्य, वेद प्रकाश, सौरभ, प्रमोद, सत्य प्रकाश, वेद प्रकाश सहित नारायण जिन्होंने दस दिनों तक 25-30 आर्यो की भोजन व्यवस्था की, साथ अशोक व संदीप कार्यालय प्रबन्धक का विशेष धन्यवाद किया जाता है। विश्व पुस्तक मेले का उद्घाटन राष्ट्रपति द्रौपदी मूर्मू तथा समापन श्री धर्मेन्द्र प्रधान, शिक्षा मंत्री भारत सरकार द्वारा हुआ, समापन सत्र में पुस्तक मेले के प्रेरणा स्रोत्र श्री विनय आर्य सभा महामंत्री ने सभी कार्यकर्त्ताओं का उत्साह बढ़ाया।

- डॉ. मुकेश आर्य 'सुधीर', संयोजक

सत्यार्थ प्रकाश पर 30/- रुपये छूट (सब्सिडी) प्रदान करने वाले महानुभावों का हार्दिक धन्यवाद

इस वर्ष नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी कृत अमूल्य ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' दानी महानुभावों द्वारा प्रदान की गई 30/- रुपये की सब्सिडी (छूट) के साथ जनसाधारण को मात्र 20 रुपये में उपलब्ध कराया गया। इस हेतु निम्नांकित महानुभावों ने अपना आर्थिक सहयोग प्रदान किया -

1.	डॉ. प्रतिभा लूथरा	15000/-	9.	आर्यसमाज सुन्दर विहार	11000/-
2.	ठाकुर विक्रम सिंह	11000/-	10.	श्री ओम प्रकाश अरोड़ा	500/-
3.	श्रीमती उषा सिड़ाना	1100/-	11.	आ.स. शाहबाद मुहम्मदपुर	2100/-
4.	आर्यसमाज यमुना विहार	1100/-	12.	आर्यसमाज सागरपुर	2100/-
5.	आर्य समाज नरायणा विहार	6000/-	13.	श्री ओमदत्त पांचाल	500/-
6.	श्री प्रेमशंकर मौर्य	1000/-	14.	श्री चरण सिंह पहलवान	500/-
7.	श्री वीरेन्द्र सोलंकी	501/-	15.	आर्यसमाज नजफगढ़	2100/-
8.	डॉ. मुकेश आर्य	2100/-	16.	श्रीमती ब्रह्मो देवी	200/-

यदि आप अभी तक सत्यार्थ प्रकाश छूट के लिए सहयोग नहीं दे सके हैं और देने की इच्छा रखते हैं तो निम्नांकित बैंक खाते में अथवा क्यू.आर. कोड स्कैन करके दान दे सकते हैं। कृपया राशि जमा करते ही **9540040388** पर डिपोजिट स्लिप व्हाट्सएप्प करके रसीद प्राप्त कर लें।

'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' खाता सं. 1098101000777
केनरा बैंक, IFSC - CNRB0001098 MICR - 110015025

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन एवं सहयोग से
कोलकाता में भी हुआ वैदिक साहित्य का प्रचार

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में आर्यसमाज कोलकाता द्वारा वैदिक साहित्य प्रचार प्रसार हेतु पुस्तक स्टाल लगाया गया, जिसमें सैकड़ो लोगों ने वैदिक साहित्य के साथ ही सत्यार्थ प्रकाश प्राप्त कर स्वयं का लाभान्वित किया।

दिल्ली सभा का प्रकल्प : घर-घर यज्ञ- हर घर यज्ञ

सभा के प्रकल्प का हो रहा लगातार विस्तार

200वीं जयंती एवं 150वें स्थापना दिवस पर दिल्ली एनसीआर चली यज्ञ की लहर

जहांगीरपुरी में हजारों यजमानों ने आहुति देकर मनाया पारिवारिक सुख समृद्धि पर्व

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित सैकड़ो प्रकल्पों में घर-घर यज्ञ, हर-घर यज्ञ अपने आपमें एक प्रमुख सेवा प्रकल्प है। जिसके माध्यम से पूरी दिल्ली और एनसीआर में जहां अनेक संस्थाओं में, घरों में, परिवारों में, प्रतिष्ठानों में, जय-जय कालोनियो में, पर्व त्योहार, राष्ट्रीय पर्वों पर, नामकरण, जन्मदिन

मुंडन, विवाह संस्कारों पर प्रतिदिन यज्ञ कराए जाते हैं और सभी को वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों से जोड़ने का अभियान चल रहा है, ईश्वर के नियम, व्यवस्था और वेद के आदेश अनुसार जीवन यापन करने की प्रेरणा प्रदान की जा रही है, वहीं जय-जय कालोनियों के अंदर छोटे-छोटे घरों में, जहां पर बैठने का स्थान भी पूरी तरह से पर्याप्त नहीं होता, साधन सुविधाओं का भी अभाव है, जो लोग यज्ञ करने कराने से अनजान है, उन सब स्थानो पर जा जाकर दिल्ली सभा की टीम, प्रचारक, धर्माचार्य सुंदर यज्ञों का प्रतिदिन आयोजन कर हैं और इससे भी आगे सभा द्वारा यज्ञ में प्रशिक्षित महिलाएं अब स्वयं यज्ञ करा रही है।

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती और आर्य समाज के 150वें स्थापना वर्ष के आयोजनों में घर-घर यज्ञ, हर घर यज्ञ के अंतर्गत 16 फरवरी 2025 को के

- शेष पृष्ठ 7 पर

आर्यसमाज कैराना में महायज्ञ का आयोजन

पश्चिमी उत्तर प्रदेश में महर्षि दयानंद सरस्वती और आर्य समाज के प्रति निष्ठावान आर्य नर-नारियों की बहुतादात है। वहां पर सैकड़ों आर्य समाज की संस्थाएं यज्ञ, योग, स्वाध्याय, सत्संग, सेवा और समर्पण के पथ पर आगे बढ़ रही हैं। 16 फरवरी 2025 को आर्य समाज मंदिर कैराना, जिला शामली में महायज्ञ का भव्य आयोजन

किया गया, जिसके दूसरे दिन क्षेत्रीय आर्यजनों के साथ डॉ. अभिषेक आर्य जी, कमल सिंघल जी, सोनू आर्य जी, गौरव सिंघल जी, अक्षय आर्य जी आदि सपरिवार मुख्य यजमान बने और सबने विश्व कल्याण की कामना करते हुए यज्ञ में आहुति दी। पंडित आशीष शास्त्री जी ने विशेष यज्ञ कराया और दिल्ली से पधारे श्री दिनेश जी ने 16 संस्कारो एवं यज्ञ के विषय में विशेष में जानकारी दी, श्री कुलदीप सिंघल जी, श्री श्याल लाल जी, श्री नरेश चंद जी, श्री रोशन लाल जी, श्री राजीव चौहान जी, श्री सतेंद्र जी आदि सभी लोग उपस्थित रहे।

200वीं जयन्ती एवं 150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष के आयोजनों की श्रृंखला में

महर्षि दयानन्द सरस्वती जन्मोत्सव एवं बोधोत्सव

दिल्ली में विशेष प्रवचन मालाओं का आयोजन : 21 से 26 फरवरी, 2025

प्रात: कालीन सत्र 10 से 1 बजे — सायं : कालीन सत्र 4 से 7 बजे

शुक्रवार, 21 फरवरी 2025

प्रात:		सायं	
स्थान	: रघुमल आर्य कन्या सीनियर सैकेण्डरी स्कूल राजाबाजार, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली-1	स्थान	: आर्य समाज हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
अध्यक्षता	: श्रीमती रचना आहूजा	अध्यक्षता	: श्री कीर्ति शर्मा
संयोजक	: श्रीमती रश्मि वर्मा	संयोजक	: श्री नरेन्द्र सिंह हुड्डा
सौजन्य	: आर्य प्रान्तीय महिला सभा दिल्ली	सौजन्य	: मध्य दिल्ली वेद प्रचार मंडल

शनिवार, 22 फरवरी 2025

प्रात:		सायं	
स्थान	: महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल, रमेश नगर	स्थान	: आर्य समाज सी.पी ब्लॉक, पीतमपुरा
अध्यक्षता	: श्री नरेन्द्र सुमन	अध्यक्षता	: श्री सुरेन्द्र आर्य
संयोजक	: श्री राकेश आर्य	सहअध्यक्ष	: श्री ब्रतपाल भगत
सौजन्य	: पश्चिमी दिल्ली वेद प्रचार मंडल	संयोजक	: श्री जोगेन्द्र खट्टर
		सौजन्य	: उत्तरी पश्चिम वेद प्रचार मंडल

रविवार, 23 फरवरी 2025

प्रात:		सायं	
स्थान	: प्लाट न. 5, पॉकेट ए-2, सेक्टर-17, द्वारका, नई दिल्ली	स्थान	: आर्य समाज डी ब्लॉक, विकासपुरी
अध्यक्षता	: स्वामी देवव्रत जी (अध्यक्ष सार्वदेशिक आर्य वीर दल)	अध्यक्षता	: कर्नल रमेश मदान
सहअध्यक्ष	: डॉ आनंद शर्मा	सहअध्यक्ष	: श्रीमती विनीता चावला
संयोजक	: श्री विनोद कालरा	संयोजक	: श्री राकेश आर्य
सौजन्य	: पश्चिमी दिल्ली वेद प्रचार मंडल	सौजन्य	: पश्चिमी दिल्ली वेद प्रचार मंडल

सोमवार, 24 फरवरी 2025

प्रात:		सायं	
स्थान	: आर्य मॉडल स्कूल आदर्श नगर	स्थान	: आर्य समाज आदर्श नगर
अध्यक्षता	: श्री प्रवीन कुमार बत्रा	अध्यक्षता	: श्री सुरेन्द्र पाल सिंह
संयोजक	: श्री अजय कालरा	सहअध्यक्ष	: श्री प्रवीन कुमार बत्रा
सहसंयोजक	: श्री संजय सोनी	संयोजक	: श्रीमती सुदीप्ता कुशवाहा
सौजन्य	: उत्तर दिल्ली वेद प्रचार मंडल	सौजन्य	: उत्तर दिल्ली वेद प्रचार मंडल

मंगलवार, 25 फरवरी 2025

प्रात:		सायं	
स्थान	: एस.एम आर्य पब्लिक स्कूल पश्चिमी पंजाबी बाग	स्थान	: आर्य समाज प्रीत विहार
अध्यक्षता	: श्री सत्यानन्द आर्य	अध्यक्षता	: श्री सुरेन्द्र कुमार रैली
संयोजक	: श्री अशोक मेहतानी	सहअध्यक्ष	: श्री अशोक कुमार गुप्ता
सहसंयोजक	: श्री राकेश आर्य	संयोजक	: श्री विकास शर्मा
सौजन्य	: पश्चिमी दिल्ली वेद प्रचार मंडल	सौजन्य	: पूर्वी दिल्ली वेद प्रचार मंडल

बुधवार, 26 फरवरी 2025

स्थान	: आर्य समाज कैलाश, ग्रेटर कैलाश 1	संयोजक	: श्री रविन्द्र कुमार
अध्यक्षता	: श्री रवि देव गुप्ता	सौजन्य	: दक्षिणी दिल्ली वेद प्रचार मंडल
सहअध्यक्ष	: श्री आर के वर्मा		

निवेदक :-
- दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
- आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य
- वेद प्रचार मंडल
- दिल्ली की समस्त आर्य समाजों के अधिकारी

साप्ताहिक स्वाध्याय

थियोसॉफी से सम्बन्ध

गतांक से आगे-

जैसे मेरा नाम सभा के सभासदों में लिखती हो, वैसा अन्यत्र भी आपने किया होगा। यह बात नि:सन्देह है।

इससे मैं आपसे पूछता हूं कि आपका धर्म क्या है? यदि आप कहें कि हमारा धर्म अमुक धर्म से विरुद्ध है, तो विरुद्ध धर्म वाला मनुष्य आपकी सभा में नहीं मिल सकता। यदि कहो कि हमारा धर्म किसी के विरुद्ध नहीं है तो उसमें कोई काहे को मिलेगा?

आप ईश्वर को हर्ताकर्ता नहीं मानतीं, यह इसी 1937 के भाद्रपद मास की बात है। इस विषय में आपने पहले कुछ नहीं कहा। हां, प्रमोद दास मित्र और डॉ लाजरस ने मुझसे काशी में इसकी चर्चा की थी। प्रमोद दास को मैंने कहा कि आप मैडम का आशय नहीं समझे होंगे। मैंने दामोदर द्वारा आप से पुछवाया तो उसने कहा कि वे ईश्वर को मानती हैं। क्या उक्त वार्ता असत्य है?..

मैं और सभी आर्य सज्जन सदा से यही मानते हैं कि सामान्यत: आर्यावर्त, इंग्लैण्ड और अमेरिका आदि सकल भूमण्डल के मनुष्य भाई हैं, परस्पर मित्र हैं और समान हैं। पर मानते हैं धर्मिक व्यवहारों के साथ, न कि असत्य और अधर्म के साथ।

यहां अंग्रेज आर्यों को चाहे जैसा मानें- कोई राज्याधिकारी हों अथवा व्यावहारिक हो, मुझको भी चाहे अपनी समझ के अनुकूल यथेष्ट मानें, परन्तु मैं तो सब मनुष्यों के साथ सुहृद्भाव से वर्तता आया हूं। इन लोगों का यह कहना कि हम इसका कोई दृढ़ हेतु नहीं देखते कि महर्षि जी के अनन्तर अन्य आर्यसमाजियों से भी वैसा ही वर्ते, तब तक है जब तक कि वे आर्यवर्तीय आर्यों का पूर्व इतिहास, आचार, नीति, विद्या, पुरुषार्थ आदि उत्तम गुणों को नहीं जानते, वेदादि शास्त्रों के सच्चे अर्थ को नहीं समझते। जब उनको ऊपर की बातों का ज्ञान हो जायगा तो उनका भ्रम अवश्य दूर हो जायगा।

आपको स्मरण हो कि काशी की चिट्ठी के उत्तर में आपने मुझे लिखा था कि यदि आप भी वेदों को छोड़ दें, तो भी हम नहीं छोड़ेंगे। आपकी यह बात धन्यवाद और प्रशंसा के योग्य है। यदि सभी यूरोपियन इस उत्तम बात में सहमत हो जाय तो कैसा आनन्द हो। और यदि वे लोग इस सिद्धान्त को न भी मानें तो हम आर्यों और आर्यसमाजों को कोई हानि नहीं हो सकती। हम तो सृष्टि के आदि से वेदों को मानते चले आए हैं। क्या हुआ जो थोड़े समय से, अज्ञानवश कुछ आर्य लोग वेद-विरुद्ध चलने लग गए हैं।

इस अवस्था में जिसका जी चाहे, आर्यसमाज में मिले। उनके न मिलने से हमारी कुछ हानि भी नहीं हो सकती। हां, उनकी हानि अवश्य है। हम तो सबकी उन्नति में अपनी उन्नति करना इष्ट मानते हैं। हमारी कामना भी यही है।

इस पत्र-व्यवहार से दो-तीन बातें स्पष्ट हो जाती हैं। थियोसॉफी के संचालक भारत के भोले हिन्दुओं और कुछेक अंग्रेजों का सहारा पाकर शिष्यता को त्याग चुके थे। वे लोग, जो शिष्य बनकर महर्षि जी के चरणों में बैठकर योग का अध्ययन करने आए थे, स्वयं गुरु और योगी बन बैठे थे। जो सोसाइटी आर्यसमाज की शाखा बनने में अपना सौभाग्य समझती थी, वह आर्यसमाजियों को अपने में सम्मिलित होने का निमन्त्रण दे रही थी। वह विनय और शिष्यभाव, गर्व और गुरुभाव में परिणत हो गए थे। कल के वेदानुयायी विद्यार्थी, आज सर्वमतवादी आचार्य बन रहे थे।

मेरठ के व्याख्यान और इन उद्धृत किये पत्रों ने आर्यसमाज और थियोसॉफी का सम्बन्ध तोड़ दिया। 1882 ई० के मई मास में आर्यसमाज के सामयिक पत्रों में हम यह घोषणा पाते हैं कि 'आर्यसमाज और थियोसॉफी का सम्बन्ध टूट गया है।'

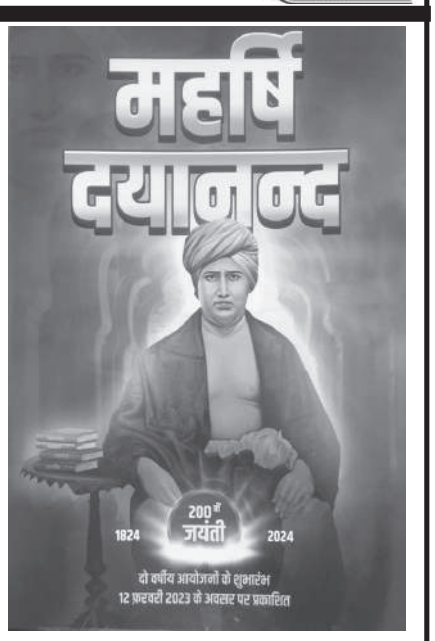

आर्यसमाज से टूटकर थियोसॉफी क्या बनी और किधर चली, इसे यहां दिखाना अभीष्ट नहीं है। केवल यह दर्शाने के लिए कि थियोसॉफी के रूप परिवर्तनों की तह में कौन-सा कारण था, हम उस पत्र की कुछ पंक्तियां उद्धृत करते हैं, जो 1922 में थियोसॉफी से त्यागपत्र देते हुए सोसाइटी के पुराने सेवक मि० बी०पी० वाडिया ने लिखी थी। आपने लिखा था-

-क्रमश:

पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति जी द्वारा लिखित एवं 200 वीं जयन्ती पर पुन: प्रकाशित जीवनी महर्षि दयानन्द से साभार
पुस्तक प्राप्ति के लिए ऑन लाइन www.vedicprakashan.com अथवा 9540040339 पर आर्डर करें।

Continue From Last Issue

Relation with Theosophy

"The anniversary of Meerut Aryasamaj has just been celebrated. Members of other Aryasamajs also participated in it. At that occasion, Swami ji said these strange words in front of everyone in his lecture 'When they inspired the civilized Arya Samajists to join their society, then should answer that if the rules and objectives of your society are different from those of Arya Samaj, there is no benefit in joining them. If they say that our rules are different from the rules of Arya Samaj, then Arya Samajists should answer that the rules of Arya Samaj are inviolable. There is no need for us to join the assembly where the rules are laid down.''

Indeed, what more could the infallible Pope of Rome say? He said Swami ji is against the claims of proud Brahmins. This would never be the meaning of his saying.

He also said that there cannot be such friendship and affection in the society of other countries, as it happens in Arya Sabhas of the same opinion and country—

We did not try to get any Arya Samaji to join our meeting without you. Yes, Arya Samajis from Mumbai, Lahore and other cities are members of our Sabha.

But we did not ask them to join.

There is so much opposition to Arya Samaj in our rules that we respect the religion of every civilized person. We accept every follower of religion, be it Arya Samaji, Christian or idol worshipper.

For this reason, I had given consent to you and two other gentlemen to join the meeting.

As for the matter, we do not care whether Arya Samajists join our society is or not. In this, there is their loss for them and perhaps for their society.

Here the British may consider the Aryans as they are - whether they are statesmen or practical, they may consider me as adequate according to their understanding, but I have been behaving with all human beings with good heart. The saying of these people that we do not give any solid reason for Swami ji to treat other Arya Samajis in the same way, is as long as they do not understand the past history, conduct, policy, knowledge, effort etc. of Aryavarti Aryans. Do not know, do not understand the true meaning of the Vedas and scriptures. When they get the knowledge of the above things, then their confusion will definitely go away.

You may remember that in reply to Kashi's letter, you had written to me that even if you leave the Vedas, we will not leave them. This thing of yours deserves thanks and appreciation. What a joy it would be if all the Europeans agreed on this excellent point. And even if those people do not accept this principle, then there can be no harm to us and the Arya Samaj. We have been following the Vedas since the beginning of the world. What happened that for a short time, due to ignorance, some Aryans have started going against the Vedas.

In this condition, whomever you want, meet in Aryasamaj. We cannot be harmed by their absence. Yes, there is definitely their loss. We consider our own progress in the progress of others as auspicious. This is also our wish.

Two or three things become clear from this correspondence. The operators of Theosophy had given up discipleship after getting the support of innocent Hindus of India and some British. Those people, who had come to study Yoga by sitting at the feet of Swamiji as disciples, themselves became gurus and yogis. The society which considered itself fortunate to be a branch of Arya Samaj, was inviting Arya Samajists to join it.

To be Continue............

With courtesy by the biography of "Maharshi Dayanand" re-published on the occasion of 200th birth anniversary and written by Pt. Indra Vidyavachaspati Ji. To buy online login WWW.vedicprakshan.com or contact - 9540040339

विज्ञापन

सुयोग्य आर्य वर चाहिए

गुरुकुल चोटीपुरा एवं पतंजलि विश्वविद्यालय हरिद्वार से शिक्षित, राजस्थान-पाली जिलान्तर्गत प्रतिष्ठित ठाकुर घराने के आर्य परिवार की 25 वर्षीय, कद-5'3'', रंग-गोरा, एम.ए. (हिन्दी) एवं आर.ए.एस. की तैयारी में संलग्न आर्य कन्या के लिए आर्य परिवार के सुयोग्य, समकक्ष योग्यता, व्यवसायी/सेवारत, शुद्ध शाकाहारी, मद्यपान रहित, सजातीय वर की आवश्यकता है। इच्छुक आर्य परिवार सम्पर्क करें - **डॉ. आर्य नरेश हनुवंत देव सिंह** (महेचा ठाकुर)
आर्य राजमहल, मु. पो. - नाणा, तहसील-बाली,
जिला-पाली (राजस्थान) **मो.- 9928742068**

प्रथम पृष्ठ का शेष

देश की वर्तमान चुनौतियों का चिन्तन ....

आज भी समझ में जो अंधविश्वास फैल रहा है, उससे हमें मानव जाति की रक्षा करनी है क्योंकि चाहे कुंभ मेला हो अथवा और अन्य ढोंग पाखंड और अंधविश्वास की बातें हो उनका इतना बड़ा दुष्परिणाम सामने आता है कि लोग अपना धन समय तथा शक्ति व्यर्थ में गंवा रहे हैं इसके लिए महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने जो पहल की थी उसने कई हद तक समाज को अंधेरों से बाहर निकाल लेकिन हमें आगे भी सत्य की ज्योति को प्रकाशित करने हैं और लोगों को अंधविश्वास और ढोंग पाखंड से बाहर निकलने का लगातार कार्य करना है, दक्षिणी दिल्ली वेद प्रचार मंडल के प्रधान श्री रवि देव गुप्ता जी ने अपने विशेष संदेश में पांच महायज्ञ को आधार बनाकर के बताया कि यह संपूर्ण मानव जाति के लिए कल्याण का आधार है, अत: हम सबको अपने जीवन में पांच महायज्ञों को करने का संकल्प लेना चाहिए, इसी क्रम में शुद्ध शाकाहार के विषय पर महर्षि दयानंद सरस्वती जी के संदेश को आधार बनाकर श्रीमती अनु वासुदेव जी ने अपने उद्‌बोधन में शाकाहार को मानव धर्म से जोड़कर उसकी प्रासंगिकता तथा विवेचना सारगर्भित तरीके से की और सभी से शाकाहार को अपनाने तथा समाज को जागृत करने का संदेश दिया, नशा हटाइए यौवन बचाइए, यह आर्य समाज का लगातार चल रहा एक क्रांतिकारी अभियान है, इसके तहत श्री शानी भारद्वाज ने देश के युवाओं को नशे से बचने का और समाज में जागृति फैलाने का संदेश दिया।

वक्ताओं के इस क्रम में आर्य समाज ग्रेटर कैलाश के धर्माचार्य श्री वीरेंद्र विक्रम जी ने परिवार के उत्थान और कल्याण को ध्यान में रखते हुए, संतान को सबसे बड़ी संपत्ति बताया और महर्षि दयानंद सरस्वती जी द्वारा सत्यार्थ प्रकाश में जो मानव निर्माण की विधि निर्देशित की गई है, उसको आधार बनाकर बच्चों को संस्कार प्रदान करने की बात कही। क्योंकि बच्चे ही भविष्य की नींव होते हैं और बच्चों को सुदिशा प्रदान करना माता-पिता, आचार्य का परम कर्तव्य है। प्राकृतिक खेती को अपनाने पर बल देते हुए, श्री राजीव चौधरी जी ने वर्तमान में जो कीटनाशक प्रयोग किया जा रहे हैं अथवा किसान अपनी फसल को बंपर फसल बनाने के लिए जो दवाइयों का सहारा लिया जा रहा है, उससे समाज को आगाह करते हुए, प्राकृतिक खेती को अपनाने की बात कही। ज्ञात हो के उपरोक्त सभी विषय आर्य समाज के द्वारा महर्षि दयानंद सरस्वती जी की दोस्तों की जयंती और आर्य समाज के 150वें स्थापना दिवस को ध्यान में रखते हुए, अभियान के रूप में गतिशील है, इनको और शक्ति के साथ प्रचारित प्रसारित करने का ध्यान चलाया जाएगा, जिससे कि मानव जाति का कल्याण हो और सभी लोग इस कार्य में जुड़ जाए। कार्यक्रम का शुभारंभ यज्ञ से हुआ और कार्यक्रम के अंत में सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने सभी उपस्थितों का आभार व्यक्त करते हुए, इस सुंदर कार्यक्रम की योजना और क्रियान्वयन पर आयोजकों को बधाई दी और सभी वक्ताओं को शुभकामनाएं और आशीर्वाद प्रदान किया।

पृष्ठ 2 का शेष

किन चुनौतियों का चिंतन .....

एक ओर कथित बाबा देश धर्म के नाम पर हमारी प्राचीन वैदिक संस्कृति की गरिमा को तार-तार कर रहे हैं, तो दूसरी तरफ इनके कारनामों का फायदा उठाकर विरोधी धर्मांतरण करने में लगे पड़े हैं। युवा बहनें भी इस धार्मिक कुचक्र का शिकार बनाई जा रही हैं। चारों ओर चुनौती है, धर्म से लेकर शिक्षा तक, संस्कार से लेकर संस्कृति तक। सामाजिक उन्नति के मूलमंत्रों और सारतत्वों का खुलेआम दहन किया जा रहा है। बचाव का कोई सहारा नहीं दिख रहा है। इस कारण इस डूबती संस्कृति को बचाने के लिए सिर्फ और सिर्फ आर्य समाज ही एक टापू के रूप में दिखाई दे रहा है।

देश ज्यों-ज्यों आगे बढ़ रहा है, त्यों-त्यों सामाजिक समस्या गहरी और व्यापक हो रही है। हमारी उन्नति के मार्ग में ऐसे काफी विघ्न हैं। विवादों के बाजार में राजनीति सर चढ़कर बोल रही है। छुट-मुट नेता चुनाव जीतने के लिए जाति और धर्म के नाम पर भाषण दे जाते हैं। लेकिन कितने लोग मानते हैं कि उन्हें अपनी राजनीति से ज्यादा धर्म से प्यार है? आज एक आर्य समाज ही है जो स्वदेश के हितार्थ में सदा कमर कसे तैयार रहता है। जिसकी अपने पूर्वजों महापुरुषों और अपनी वैदिक संस्कृति पर आंतरिक श्रद्धा और भक्ति है। किन्तु यह काफी नहीं है। हमारी लड़ाई लंबी है जो सभी आर्यों के सहयोग से पूर्ण हो सकती है। हमारी आध्यात्मिकता और देश ही हमारा जीवनरक्त है। यदि यह साफ बहता रहे, यदि यह शुद्ध है तो सब कुछ ठीक है। चाहे देश की निर्धनता ही क्यों न हो, यदि खून शुद्ध है, तो संसार में हमारा कोई कुछ नहीं बिगाड़ पाएगा। यदि इस खून में ही व्याधि उत्पन्न हो गई। तो क्या होगा! यह आप स्वयं अनुमान लगा सकते हैं। इन सब विसंगतियों, कुप्रथाओं, अंधविश्वासों से हो रही सांस्कृतिक हानि से किस प्रकार बचना है? कैसे इस देश को पुन: राम और कृष्ण के विचारों की भूमि बनाना है? इन चुनौतियों का चिंतन आवश्यक है। **-संपादक**

पृष्ठ 3 का शेष

परीक्षा में कैसे मिलेगी सफलता?

जो क्लास में प्रथम आते हैं, वे आसमान से उतरे हुए कोई फरिश्ते नहीं होते हैं। सोचना चाहिए कि जैसे वे हैं, वैसे ही मैं हूं। मुझे थोड़ी सी कोशिश ज्यादा करनी पड़ेगी। बस इतनी सी बात है। थोड़ा टाइम पढ़ाई में ज्यादा लगेगा तो आप भी आगे बढ़ सकते हैं ऐसा मन में विश्वास रखकर पढ़ें।

मनोविज्ञान के अनुसार मानव में तीन चीजें हैं। एक है सुपर कॉन्शस माईण्ड, दूसरा सबकॉन्शिस माईण्ड और तीसरा कॉन्शस माईण्ड। जो सबकॉन्शस माईण्ड है वह आपका अवेचतन मन है। वहां जाकर आपकी सारी चीजें रिकार्ड होती है। आपकी प्रैक्टिस वहां जा करके अंकित हो जाती है। इसके लिए यह करें कि जब भी आप पढ़ें, तो इतना मन लगाकर पढ़ें कि वह स्टोर हो जाए और जब स्टोर हो जाए, तो जो आपने याद कर लिया है, उसे रिवाईज जरूर किया करें। जो आपने पढ़ा उसके पॉइन्ट्स नोट कर लिया करें। पॉइन्ट्स नोट करने के बाद दुबारा रिवाईज करने का मौका आए, तो उन्हीं पॉइन्ट्स को देखकर, एक बार सरसरी नजर पूरे पाठ पर डाल लीजिए। इससे आपको अपना पाठ हमेशा याद रहेगा।

महर्षि दयानन्द सरस्वती का 201वां जन्मोत्सव, आर्य समाज विडला लाइन्स, में 23 फरवरी को यज्ञ, भजन और प्रवचनों के माध्यम से मनाया जायेगा।

पृष्ठ 5 का शेष

जहांगीरपुरी में हजारों यजमानों ने ....

ब्लॉक रामलीला पार्क जहांगीरपुरी दिल्ली में पारिवारिक सुख समृद्धि पर्व के रूप में यज्ञ पूर्णाहुति समारोह का आयोजन किया गया। जिसमें 1 दिसंबर 2024 से लेकर 31 दिसंबर 2024 तक लगभग साढ़े 500 घरों में यज्ञ करने वाली प्रशिक्षण प्राप्त महिलाओं ने मिलकर यज्ञ की पूर्णाहुति की इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के धर्माचार्य प्रचारक संवर्धन आर्य समाज जहांगीरपुरी के अधिकारी एवं अनेक अन्य आर्य समाजों के अधिकारी उपस्थित रहे, यज्ञ के ब्रह्म भी प्रशिक्षित महिलाएं थी, यज्ञ करने वाले और यज्ञ की व्यवस्था देखने वाले समस्त कार्यक्रम होने की देखरेख में समारोह पूर्वक संपन्न हुआ, पारिवारिक सुख समृद्धि पर्व के रूप में यह आयोजन अपने आप में अत्यंत प्रेरणादायक सिद्ध हुआ। सैकड़ो हवन कुंडों पर हजारों यजमानों ने वेद मित्रों के साथ आहुति दी और विश्व कल्याण की कामना की प्रेम सोहर के वातावरण में पूरा कार्यक्रम संपन्न हुआ। – ***रामभरोसे आर्य, मन्त्री***

आर्यसमाज मन्दिर द्वारका नई दिल्ली के

भवन निर्माण हेतु सहयोग की अपील

अत्यंत हर्ष के साथ आपको सूचित कर रहे हैं कि परमपिता परमात्मा की असीम कृपा से दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत आर्य समाज मंदिर द्वारका, नई दिल्ली को डी.डी.ए. द्वारा द्वारका सैक्टर-17 में 400 वर्ग मीटर का प्लॉट मिल गया है। जिस पर आर्य समाज द्वारका के भव्य भवन निर्माण आरम्भ किया जाना है। बंधुओं, आर्य समाज द्वारका को आपके तथा आपकी संस्थान के सहयोग की अत्यंत आवश्यकता है। अत: आपसे अनुरोध है पवित्र कार्य को पूरा करने में आर्य समाज मंदिर द्वारका का सहयोग करें तथा अपने परिवार/मित्रों/रिश्तेदारों/ सोसायटी इत्यादि को भी आर्थिक सहयोग करने के लिए प्रेरित करें। आप अपना सहयोग सीधे निम्नांकित बैंक खाते में/अथवा स्कैन कोड के माध्यम से प्रदान कर सकते हैं-

ARYA SAMAJ TEMPLE SOCIETY SECTOR 11
A/C No. 4447000100113452 IFSC: PUNB0444700
PUNJAB NATIONAL BANK, SEC -10 DWARKA, DELHI

-: निवेदक:-

आर्य समाज मंदिर द्वारका, 9811888707, 9560631667, 9899444347

शोक समाचार

स्वामी अमृतानन्द सरस्वती जी का निधन

आर्यसमाज ईटारसी एवं गुरुकुल जमानी से सम्बद्ध आर्यसमाज के संन्यासी स्वामी अमृतानन्द जी का 6 फरवरी, 2025 को आकस्मिक निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार 7 फरवरी को गुरुकुल जमानी इटारसी में पूर्ण वैदिक रीति के साथ सम्पन्न हुआ। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा गुरुकुल जमानी में सम्पन्न हुई।

श्रीमती कृष्णा देवी जी का निधन

आर्यसमाज आर्यपुरा, सब्जी मंडी के पूर्व प्रधान स्व. श्री ओम प्रकाश वर्मा जी की धर्मपत्नी श्रीमती कृष्णा देवी जी का दिनांक 19 फरवरी, 2025 को आकस्मिक निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ निगम बोध घाट पर किया गया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्माओं को सद्‌गति एवं शोक-संतप्त बपरिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

⑧ साप्ताहिक आर्य सन्देश
सोमवार 17 फरवरी, 2025 से रविवार 23 फरवरी, 2025
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
दिल्ली पोस्टल रजि.नं. डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2024-25-2026
LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 20-21-22/02/2025 (वीर-शुक्र-शनिवार)
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2024-25-26
आर.एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 19 फरवरी, 2025

प्रतिष्ठा में,

ओ३म्

150वां आर्य समाज स्थापना दिवस, मुंबई

29-30 मार्च 2025, स्थान: सिड्को, वाशी, मुंबई

ज्ञान ज्योति महोत्सव आयोजन समिति की बैठक 1 फरवरी, 2025 के निर्णयानुसार मुम्बई यात्रा का विवरण

यात्रा एवं कार्यक्रम : 27 मार्च से 1 अप्रैल, 2025

कृपया अपने रेल/विमान की टिकटें जल्दी कराएं

रेलवे यात्रा : 27 मार्च 2025 : प्रस्थान - नई दिल्ली
28 मार्च 2025 : प्रातः मुंबई पहुँचना एवं भ्रमण
29-30 मार्च 2025 : कार्यक्रम में भागीदारी
31 मार्च 2025 : भ्रमण एवं प्रस्थान - सायं एवं रात्रि मुंबई से
1 अप्रैल 2025 : वापसी दिल्ली पहुँचना

★ रेल/हवाई यात्रा/भ्रमण में रास्ते की सभी व्यवस्थाएं सदस्य को स्वयं करनी होगी।
★ मुंबई पहुंचने पर आवास (दो सदस्यों की भागीदारी में), भोजन तथा भ्रमण की व्यवस्था रहेगी।
★ सदस्य शीघ्र अति शीघ्र पंजीकरण तथा राशी जमा करवाएं। वरना रेलवे टिकट नही मिलेगी लिंक अथवा QR कोड स्कैन करें।
★ रेल बुकिंग हेतु संपर्क सूत्र : 9811227215
★ विमान बुकिंग हेतु संपर्क सूत्र : 9831067332

bit.ly/150sthapnadiwas

हवाई यात्रा : 28 मार्च 2025 : प्रातः दिल्ली से प्रस्थान मुंबई पहुँचना एवं भ्रमण
29-30 मार्च 2025 : कार्यक्रम में भागीदारी
31 मार्च 2025 : भ्रमण एवं प्रस्थान - सायं, रात्रि मुंबई से : तथा दिल्ली पहुँचना

★ बुकिंग कैंसिल होने पर पैसा वापिस नहीं किया जायेगा।

★

रेल यात्रा	रेल टिकट	आवास व्यय	भ्रमण इत्यादि	कुल व्यय
साधारण स्लीपर	1500	2000 (धर्मशाला, भवन)	2000	5500
गरीब रथ एसी	2500	6000 (एसी बेडरूम अटैच्ड बाथरूम)	2000	10550
3 एसी	5300	6000 (एसी बेडरूम अटैच्ड बाथरूम)	2000	13300
2 एसी	7200	6000 (एसी बेडरूम अटैच्ड बाथरूम)	2000	15200
हवाई यात्रा	सुविधानुसार	6000 (एसी बेडरूम अटैच्ड बाथरूम)	2000	8000

★ आवास एवं भ्रमण हेतु संपर्क सूत्र : 9811129892 (प्रातः 10-1 बजे/सायं 4-7 बजे)

निवेदक :- ★ ज्ञान ज्योति पर्व महोत्सव आयोजन समिति ★ दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली ★ आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष एवं तार्किक समीक्षा के लिए
उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षण मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ
प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23x36%16
विशेष संस्करण (सजिल्द) 23x36%16
पॉकेट संस्करण

विशिष्ट पॉकेट संस्करण
स्थूलाक्षर (सजिल्द) 20x30%8
उपहार संस्करण

सत्यार्थ प्रकाश अंग्रेजी अजिल्द
सत्यार्थ प्रकाश अंग्रेजी सजिल्द

प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
कृपया एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द जी की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें..
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph : 011-43781191, 09650522778
E-Mail : aspt.india@gmail.com

JBM Group
Our milestones are touchstones

ENHANCING TECHNOLOGY
EMPOWERING PEOPLE
ENABLING INNOVATION

JBM Group stands committed towards creating value for all our stakeholders and consistently building sustainable business models via innovation and customer orientation programs, thereby creating stronger synergies for all our businesses.

Technology has been the bed rock and a key catalyst for our growth. Our persistence towards achieving excellence has transformed us and we have amalgamated our strengths and R&D acumen to make our products & services future-ready, through the power of People, Innovation and Technology.

JBM Group - Plot No.9, Institutional Area, Sector 44, Gurgaon – 122 002
91-124-4674500-550 | www.jbmgroup.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्प्लेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह